इकाई 9 संरचनावाद*

इकाई की रूपरेखा

9.0 परिचय

9.1 संरचनावाद की ओर अग्रसर

9.2 संरचनावाद की मान्यताएं

9.3 मार्क्स और फ्रायड के विचारों में संरचनावाद

9.4 फर्डिनांड द सस्यूर और मानवशास्त्रीय संरचनावाद पर उनका प्रभाव

9.5 क्लाड लेवी–स्ट्रॉस

9.6 एडमंड लीच (नव) संरचनावाद

9.7 सारांश

9.8 संदर्भ

9.9 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- मानवशास्त्रीय विचारों में बदलाव को समझने में;
- संरचनावाद में बुनियादी मान्यताओं की पहचान करने में;
- संरचनावाद के उद्भव का वर्णन करने में;
- भाषाविज्ञान में संरचनात्मक विचारों को मानवविज्ञान से जोड़ने में;
- क्लाड लेवी–स्ट्रॉस के कार्यों को समझने में; तथा
- लीच द्वारा लेवी–स्ट्रॉस की आलोचना का मूल्यांकन करने में।

9.0 परिचय

अब तक हमनें मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के उदय के प्रारंभिक चरणों के बारे में चर्चा की हैं जो समाज और संस्कृति को मुख्य रूप से विकासवाद के दृष्टिकोण से देखती है, और प्रसारवाद की ओर बढ़ने पर एक समाज के अध्ययन में उसके ऐतिहासिक पहलुओं की प्रासंगिकता को समझने की कोशिश करते हैं। यह इकाई मानवविज्ञानियों के उन कार्यों पर ध्यान केंद्रित करेगी जिन्होंने विकासवाद से परे जा कर इसे देखा और समाज की भीतरी संरचनाओं के उद्भव को समझने की कोशिश की।

इसका केंद्र बिंदु, उस विशेष समय (यहाँ और अभी) में समाज में क्या चल रहा था की प्रासंगिकता और समकालिक दृष्टिकोण को समझना था। इस प्रकार, इस इकाई में लेवी–स्ट्रॉस और एडमंड लीच के कार्यों की चर्चा की जाएगी, जिनका संरचनावाद में बहुत बड़ा योगदान है।

* **योगदानकर्ता**– डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

9.1 संरचनावाद की ओर अग्रसर

मानवविज्ञान के अध्ययन और विशेष रूप से सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञानने समय–समय पर अनुसंधान के अपने कार्यसूची(एजेंडे) को स्थानांतरित कर दिया है। इस एजेंडे को मोटे तौर पर तीन मुख्य क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है। शुरुआत में, यानी 19वीं शताब्दी में, अध्ययन का प्रमुख एजेंडा विभिन्न चरणों की स्थापना के इर्द–गिर्द घूम रहा था, जिन्हें मनुष्य ने अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुँचने के लिए पार किया। सामाजिक विकास का एजेंडा इस अध्ययन का केंद्र बिंद था। यह विकासवाद के सैद्धांतिक आधार में परिलक्षित होता था जिसका उद्देश्य विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को उनके विकास और क्रमागत उन्नति के स्तर के अनुसार अलग–अलग चरणों में वर्गीकृत करना था। इससे *आदिवासी* समाजों का अध्ययन हुआ जिन्हें *मानव अतीत* का अवशेष माना जाता था। हालांकि, समय के साथ यह महसूस किया गया कि विशाल क्षेत्र आंकड़ों की उपस्थिति के कारण विभिन्न समाजों को किसी स्पष्ट योजना में व्यवस्थित करना असंभव होता जा रहा था। इस प्रतिमान से संबंधित कार्यप्रणाली की प्रकृति में अनुमान लगाने के लिए इसकी आलोचना भी की गई थी। कार्यप्रणाली के मोर्चे पर, प्रत्यक्षवाद और अनुभववाद पर जोर देने से समाज में फिर से समकालिक अध्ययन का उदय हुआ, जो समाज के वर्तमान ('यहां और अब ') अध्ययन से अधिक संबंधित था, ना कि एक ऐतिहासिक विवरण से जो पहले लक्षित था। इससे मानवविज्ञान में कार्यात्मक और संरचनात्मक–कार्यात्मक प्रतिमानों का उदय हुआ।

इन सैद्धांतिक प्रतिमानों ने समुदायों या जनजातियों नामक विशिष्ट सांस्कृतिक संस्थाओं पर बड़ी मात्रा में आंकड़े एकत्रित किए, जो नृवंशविज्ञान के रूप में प्रस्तुत किए गए थे। व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न संस्थाओं के कार्यकरण तथा स्वयं संस्थाओं की संरचना पर मुख्य बल दिया गया। क्षेत्र के आंकड़ों में समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे उनके नातेदारी, परिवार, राजनीतिक संगठन, आर्थिक संगठन आदि का विस्तृत विवरण शामिल था। जिसका बाद में समाज को नियंत्रित करने वाले बुनियादी ढांचे और कानूनों को समझने के लिए कार्यात्मक या संरचनात्मक–कार्यात्मक परंपरा के अनुसार विश्लेषण किया गया था। कार्यात्मक प्रतिमान में मूल धारणा सामूहिक समझ से कुछ इस प्रकार संबंधित है कि कुछ ऐसे कानून हैं जो दुनिया भर में मानव समाज को नियंत्रित करते हैं और मानवविज्ञानियों का मूल कार्य उन कानूनों को वैज्ञानिक रूप से स्थापित करना है। इस तरह के प्रतिमान का मूल उद्देश्य अवलोकन योग्य स्थितियों का अध्ययन करना था। यही कारण है कि रैडक्लिफ ब्राउन ने मानवविज्ञान को 'समाज का प्राकृतिक विज्ञान' नाम दिया, उन्होंने 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' शब्द को मानवविज्ञान के लिए चुना (डी'एंड्रेड 1995)। जैसा कि मालिनोवस्की द्वारा प्रस्तावित किया गया कि, व्यक्तिगत रूप से अधिक उन्मुख कार्यात्मक दृष्टिकोण ने मानव आवश्यकताओं के आधार पर एक अलग स्पर्शरेखा चुनी जो व्यक्तिगत जरूरतों के लिए संस्थानों और प्रथाओं के योगदान पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है और जो केवल अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक एकजुटता और स्थिरता में योगदान देती है। इस स्कूल ने संरचना पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया।

दूसरी ओर, फ्रांसीसी परंपरा के मानव विज्ञान में एक और प्रतिमान आकार ले रहा था। इसका नेतृत्व क्लाउड लेवी–स्ट्रॉस ने किया था। यह बदलाव बाहर की ओर देखने से लेकर अंदर की ओर देखने तक था। इसका उद्देश्य सीधे तौर पर समाज और संस्कृति

को समझने के लिए इसका अध्ययन करना नहीं था ,बल्कि इसका उद्देश्य यह समझने के लिए स्थानांतरित हो गया कि मानव मन कैसे कार्य करता है। यह मान लिया गया था कि जिन बुनियादी सिद्धांतों पर समाज स्थापित होते हैं, वास्तव में वे सिद्धांत हैं जिन पर मानव मन कार्य करता है। मानवविज्ञानका एजेंडा अब मानव मन की कार्यप्रणाली को समझना बन गया। जिसके कारण मानव विचारों और विचार प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत अब अनुसंधान के केंद्र में आए। संस्कृति और समाज को समझने के सिद्धांत के रूप में संरचनावाद इस तीसरे प्रतिमान के अंतर्गत आता है। इसलिए, जब हम संरचनावाद, या किसी सैद्धांतिक प्रतिमान के बारे में बात करते हैं, तो हमें मानवशास्त्रीय सोच और विश्लेषण में बदलाव के संदर्भ में बात करनी होगी(एरिक्सन और नीलसन 2001)।

तीसरा मानवशास्त्रीय एजेंडा जिसके भीतर संरचनावाद को स्थापित करने की आवश्यकता है, वह है 'विचार प्रणाली' का अध्ययन करने का एजेंडा। वास्तव में संरचनावाद एक सिद्धांत होने से ज्यादा, एक दर्शन है। इस दर्शन ने न केवल मानवविज्ञान बल्कि भाषा विज्ञान, साहित्य, कला, मनोविज्ञान और कई अन्य विषयों को भी प्रभावित किया है। संरचनात्मक मानवविज्ञान संरचनात्मक भाषाविज्ञान का बहुत अधिक ऋणी है क्योंकि इसने विचारों को उधार लिया है और संस्कृति को समझने के लिए उनका उपयोग किया है। भाषाविदों द्वारा शब्दों के माध्यम से भाषा को समझने के लिए लागू किए गए विचारों को मानवविज्ञानियों द्वारा संस्कृतियों को समझने के लिए अपनाया गया था। इस प्रकार, संरचनावाद एक व्यापक दर्शन है जिसे इसके सभी आयामों में समझने की आवश्यकता है। हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि यह दर्शन हमें क्या प्रदान करता है और संस्कृतियों के बारे में और इस ग्रह पर हमारे अस्तित्व के बारे में हमें क्या बताने की कोशिश करता है (डी'एंड्रेड, 1995)।

9.2 संरचनावाद की मान्यताएं

मानवविज्ञान में संरचनावाद आंतरिक या आंतरिक तर्क या व्याकरण की ओर एक बदलाव है जो हमारी गतिविधियों, व्यवहारों और बहुत कुछ को परिभाषित करता है। यह माना जाता था कि एक बार जब हम उन सिद्धांतों को समझ लेंगे जिन पर मानव मन कार्य करता है तो हम समाज और संस्कृति को समझने में सक्षम होंगे। इस प्रकार, विचार प्रक्रिया की संरचना मानवविज्ञानियों के लिए केंद्रीय बन गई। संरचनावाद में भौतिकता के ऊपर पद्धति को प्रधानता दी जाती है। किसी विशेष घटना के विभिन्न भागों को एक–दूसरे से अलग–थलग करके नहीं देखा जा सकता है, बल्कि उन्हें एक साथ देखा जाता है कि वे कैसे सामंजस्य बनाकर एक पद्धति का निर्माण करते हैं।

चूंकि, संरचनावाद में एक और महत्वपूर्ण धारणा यह है कि मानव मस्तिष्क जैविक रूप से समान है इसलिए मानव विचार प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत भी समान होंगे। संरचनावाद में यह एक महत्वपूर्ण विचार है जो मानता है कि सभी संस्कृतियों में एक अंतर्निहित समानता है। संस्कृतियाँ केवल सतही स्तर पर भिन्न दिखाई दे सकती हैं लेकिन जब हम गहराई में जाने की कोशिश करते हैं तो हमें सभी संस्कृतियों के बीच समानताएं मिल सकती हैं। यह इस सिद्धांत में एक केंद्रीय विचार है। इसका उद्देश्य इस ग्रह पर मनुष्यों के एक सामान्य और साझा अस्तित्व को प्रक्षेपित करना है। जिस तरह से मनुष्य अपने विचारों को व्यवस्थित करता है वह उस सिद्धांत पर

आधारित है जिस पर मानव मन कार्य करता है और यह हर जगह समान है क्योंकि जैविक रूप से मानव मस्तिष्क समान हैं। इसलिए, संरचनावाद मनुष्य में कुछ जन्मजात गुणों के बारे में भी बात करता है। संरचनाएं जन्मजात होती हैं, वे हमारे जन्म से ही मौजूद होती हैं और जिस तरह से मानव मस्तिष्क को संरचित और कार्य करने के लिए क्रमादेशित किया जाता है, वह उसका परिणाम होता है। संरचनावादी सभी संस्कृतियों में अंतर्निहित समानता के बारे में बात करते हैं। संरचनावाद में मौलिक विश्वास यह है कि हम जो कुछ भी देखते हैं, वह वास्तव में सिर्फ सतही है, और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ नहीं बता सकता है। इसे और स्पष्ट रूप से समझने के लिए, हमें उस सतह को गहराई से समझने की जरूरत है। संरचनावाद के अनुसार वास्तविकता प्रत्यक्ष रूप से देखने योग्य नहीं है लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसे खोजने की आवश्यकता है। उनके लिए हकीकत दिखाई नहीं देती बल्कि छिपी होती है। इस प्रकार, उद्देश्य इस छिपी हुई वास्तविकता तक पहुंचना है। ऐसा नहीं है कि हम वास्तविकता तक पहुंचने के लिए किसी अनुभवजन्य समझ या प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम का सहारा ले रहे हैं। सवाल यह उठता है कि हमें इस छिपी, अंतर्निहित वास्तविकता के बारे में कैसे पता होना चाहिए? इसका उत्तर तर्क या कारण से है। मनुष्य के तर्क की शक्ति के माध्यम से, हम उस वास्तविकता तक पहुँचने में सक्षम हैं जो मानव इंद्रियों को दिखाई नहीं देती है। केवल तर्क के द्वारा ही हम यह जान पाते हैं कि वास्तव में वास्तविक क्या है। इस विचार प्रक्रिया में मानव मन फिर से एक केंद्रीय स्थान रखता है क्योंकि सभी तर्क मन में ही किए जाएंगे। मानव मन के तर्क की शक्ति के माध्यम से हम वास्तविकता तक पहुंचने में सक्षम होंगे (पामर 1997)। इसे मानवविज्ञान में अनुभववाद से तर्कवाद में बदलाव के रूप में देखा जा सकता है। विशेष रूप से ब्रिटिश मानवविज्ञान अनुभववाद से अधिक प्रभावित था। संरचनात्मक–कार्यात्मक परंपरा में मानवविज्ञानी दुर्खीम से प्रभावित थे। प्रत्यक्षवाद की ज्ञानमीमांसा और प्राकृतिक व्यवस्थाओं की तरह सामाजिक व्यवस्थाओं को नियंत्रित करने वाले नियमों की खोज का विचार इस विचार प्रक्रिया के मूल में था। उनके लिए प्रत्यक्ष अवलोकन सामाजिक वास्तविकता को समझने की कुंजी थी। दूसरी ओर, फ्रांसीसी परंपरा तर्कवाद और तर्कसंगतता के विचारों से प्रभावित थी। तर्कवादियों का मत था कि हमें अपने मन को तर्क करने के लिए प्रशिक्षित करना होगा, क्योंकि उनके लिए वास्तविकता को केवल तर्क के माध्यम से समझा या पहुँचा जा सकता है, न कि केवल यह देखने से कि वास्तविकताएँ छिपी हुई हैं, और वे सतह के नीचे हैं। संरचनात्मक विचार को समझने का दूसरा तरीका संस्कृति का मार्ग है। प्रकार्यवाद की तुलना में संस्कृति शब्द की अवधारणा संरचनावाद में बहुत भिन्न है। जबकि, कार्यात्मकता में संस्कृति को एक विशाल उपकरण के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्तियों की जरूरतों को पूरा करता है, संरचनावाद में संस्कृति को एक भाषा के रूप में देखा जाता है। भाषा की तरह संस्कृति का भी अपना व्याकरण होता है। कोई भी भाषा बोलते समय या लिखते समय हम हमेशा व्याकरण से अवगत नहीं होते हैं, लेकिन यह भाषा का आधार स्तम्भ होता है। इसी तरह, संस्कृति का अभ्यास करते समय, हम हमेशा उन नियमों से अवगत नहीं होते हैं जो इसे नियंत्रित करते हैं क्योंकि वे हमारे सचेत विचारों के भीतर होते हैं और वे हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचे 1

1) संरचनावाद में बुनियादी मान्यताएं क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) फ्रांसीसी संरचनात्मक विचार को अनुभववाद पर आधारित ना मानकर तर्कवाद पर आधारित क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.3 मार्क्स और फ्रायड के विचारों में संरचनावाद

अब इससे पहले कि हम क्लाड लेवी–स्ट्रॉस के विचारों और कार्यों को समझने के लिए आगे बढ़ें, हमें संरचनात्मक विचार में कार्ल मार्क्स और सिगमंड फ्रायड जैसे दो बहुत महत्वपूर्ण हस्तियों के बारे में चर्चा करनी चाहिए। इन दोनों विचारकों में संरचनात्मक प्रवृति है। हालांकि, मार्क्स और फ्रायड दोनों ने खुद को और अपने विचारों को अनुभववाद के दायरे में माना, लेकिन फिर भी, उनके पास संरचनात्मक विचारों की प्रवृत्तियां हैं जो संरचनावाद के विचार को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाती हैं। ये दोनों विद्वान यह जानने में रुचि रखते थे कि बाह्य भाग के भीतर क्या है? आइए देखें कि मार्क्स का क्या कहना है। मार्क्स कह रहे हैं कि हमने जो भी अधिरचनाएँ बनाई हैं जैसे कानून, राज्य व्यवस्था, धर्म आदि, वे वास्तव में अर्थव्यवस्था के बुनियादी ढांचे पर बनी हैं। दूसरे शब्दों में, कानून, राजनीति, धर्म आदि के रूप में अधिरचनाओं के आधार पर अर्थव्यवस्था या आर्थिक संबंध होते हैं, उदाहरण के लिए, उत्पादन के साधन, उत्पादन के तरीके, उत्पादन के संबंध आदि।

इस अर्थ में जब हम संरचनावाद या संरचनात्मक समझ को देखते हैं तो हमें एहसास होता है कि यह एक प्रकार की न्यूनतावादी समझ है। यह सामाजिक और सांस्कृतिक घटनाओं को कुछ बुनियादी ढांचे या आयामों में कम करने की कोशिश करता है। संपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक वास्तविकता को कुछ समझने योग्य शब्दों या अवधारणाओं में बदल दिया जाता है। इसी समझ के साथ वर्ग का मार्क्सवादी विश्लेषण सामने आता है। जब हम मानते हैं कि सामाजिक और सांस्कृतिक वास्तविकताएं आर्थिक बुनियादी ढांचे द्वारा निर्देशित और प्रभावित होती हैं या उस पर आधारित होती हैं तो हम यह भी महसूस करते हैं कि कानून, धर्म, राज्य व्यवस्था आदि जैसी संस्थाओं के रूप में अधिरचना बुर्जुआ हितों द्वारा निर्देशित होती है। इस प्रकार, कार्ल मार्क्स के अनुसार, एक आर्थिक आधार है जो अन्य सभी अधिरचनाओं का मार्गदर्शन करता है। मार्क्स ने कहा कि सामाजिक वास्तविकता चेतना की परियोजनाओं के कारण नहीं होती है और सामाजिक वास्तविकता की सच्चाई तत्काल चेतना से नहीं समझी जाती है। मार्क्स के अनुसार, इसमें अंतर्निहित संरचनाएं हैं जो

सामाजिक वास्तविकताओं को निर्धारित करती हैं। और यह अंतर्निहित संरचना एक आर्थिक आधार है और बाकी सब कुछ उसी आधार पर बनाया गया है।

आइए अब सिगमंड फ्रायड के बारे में बात करते हैं। जब हम मनोविश्लेषण पढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि फ्रायड का विचार था कि मानव व्यवहार को समझने के लिए हमें अचेतन मन को समझने की आवश्यकता है। यह अचेतन मन छिपा हुआ है। सभी इच्छाएं, विचार, इस अचेतन मन का हिस्सा बनते हैं और मानव व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए फ्रायड का यह भी विचार था कि मानव व्यवहार के रूप में जो कुछ भी दिखाई देता है वास्तव में वह चेतन मन के भीतर स्थित अचेतन विचार द्वारा निर्देशित या उत्पन्न होता है। मनुष्य के रूप में हम इन अचेतन विचारों से अनजान हैं लेकिन फिर भी वे हमारे व्यवहार को निर्देशित और प्रभावित करते हैं। यह एक संरचनावादी विचार है जिससे यह इकाई संबंधित है। हालाँकि मार्क्स और फ्रायड दोनों के संरचनावादी विचार क्लाउड लेवी स्ट्रॉस से भिन्न हैं। मूल अंतर इस तथ्य में निहित है कि मार्क्स और फ्रायड के विचारों में इतिहास पर जोर दिया गया है। हालांकि, क्लाउड लेवी–स्ट्रॉस के लिए इतिहास महत्वपूर्ण नहीं है। उनके विचारों की प्रकृति अधिक समकालिक है। उनके विचार बड़े पैमाने पर प्राग स्कूल ऑफ स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स द्वारा संचालित होते हैं (पामर, 1997)।

प्राग स्कूल ऑफ स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स– यह भाषाई विचार का एक स्कूल है जिसे प्राग में 1920 के दशक में स्थापित किया गया था। इस स्कूल के प्रमुख आंकड़ों में रूसी भाषाविद् निकोले ट्रुबेट्सकोय और रूसी मूल के अमेरिकी भाषाविद् रोमन जैकबसन शामिल हैं। उन्होंने भाषा के भीतर के तत्वों पर जोर दिया जो कि शब्दों की ध्वनियाँ हैं और बताया कि मानव कैसे विपरीत प्रणाली के आधार पर ध्वनियों के बीच अंतर करता है।

अपनी प्रगति जाँचे 2

3) मार्क्स में संरचनात्मक विचार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) फ्रायड में संरचनात्मक विचार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 फर्डिनांड द सस्यूर और मानवशास्त्रीय संरचनावाद पर उनका प्रभाव

जैसा कि ऊपर पहले ही कहा जा चुका है कि मानवशास्त्रीय संरचनावाद संरचनात्मक भाषाविज्ञान से प्रभावित है। अब हमेंसस्यूरके विचारों को समझना और देखना महत्वपूर्ण है कि लेवी–स्ट्रॉस द्वारा संस्कृति का अध्ययन करने के लिए उनका कैसे उपयोग किया गया था। सस्यूर के अनुसार, किसी भाषा में शब्दों का नाम चीजों से नहीं बल्कि अवधारणाओं और विचारों से होता है। यह विचार प्लेटो द्वारा सामने रखे गए विचारों के समान था। प्लेटो के अनुसार शब्दों का एक भाव होता है। उदाहरण के लिए, त्रिभुज शब्द यह दर्शाता है कि सभी त्रिभुजों में क्या समानता है। त्रिभुज विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं लेकिन सभी की तीन भुजाएँ होती हैं। इसलिए, त्रिभुज का एक भाव या अंतर्निहित गुण होता है जो सभी त्रिभुजों के लिए समान होता है। संस्कृति में उपयोग होने पर इस विचार का अर्थ है कि सभी संस्कृतियां अलग दिख सकती हैं लेकिन उन सभी में कुछ न कुछ समानताएं हैं। यह एक अंतर्निहित भाव है जो सभी संस्कृतियों के लिए सामान्य है। हालाँकि, सस्यूर के विचार प्लेटो से थोड़े अलग थे। सस्यूर का विचार था कि शब्द का अर्थ शब्द में ही नहीं बल्कि दूसरे शब्दों के संबंध में होता है। यह संबंध विरोध की एक प्रणाली पर आधारित है। इसका अर्थ यह है कि एक शब्द का अर्थ वही है जो दूसरे शब्द का नहीं है। उनका कहना है कि भाषा में केवल अंतर होता है। उदाहरण के लिए, 'बैट' शब्द का अर्थ अलग है जो 'बेट', 'बिट', या 'बॉट' शब्द का अर्थ नहीं है। सस्यूर के लिए, एक शब्द में महत्वपूर्ण बात अन्य शब्दों के साथ इसकी ध्वनि का अंतर है। इसी तरह, संस्कृति को उसके घटकों में तोड़ा जा सकता है और वे एक–दूसरे से भिन्न होते हैं, जो एक–दूसरे के विरोध में होते हैं। उदाहरण के लिए, जाति व्यवस्था को शुद्धता और अशुद्धता के घटकों में विभाजित किया जा सकता है और वे एक दूसरे के विरोध में खड़े होते हैं।

सस्यूर आगे La Langue (भाषा) और Parole (वाणी) के बीच अंतर करते हैं। भाषा संपूर्ण भाषाई व्यवस्था का द्योतक है और वाणी भाषा का क्रियात्मक भाग है। वाणी भाषा पर आधारित है। भाषा की तुलना सामाजिक संरचना से की जा सकती है जिसमें व्यक्ति पैदा होते हैं और वाणी की तुलना उनके वास्तविक व्यवहार से की जा सकती है। वास्तविक व्यवहार समग्र संरचना द्वारा निर्देशित होता है। सस्यूर शतरंज के खेल की एक सादृश्यता देते हैं। उनका कहना है कि शतरंज में व्यक्तिगत चालों की तुलना वाणी से की जा सकती है और खेल के नियमों की तुलना भाषा से की जा सकती है। खेल की व्यक्तिगत चालें सामान्य नियमों पर आधारित होती हैं। आगे उनका कहना है कि मूल नियम या अंतर्निहित संरचना विरोध या अंतर के सिद्धांत पर आधारित है। उदाहरण के लिए, शतरंज के खेल में, मोहरा रानी नहीं है, रानी बिशप नहीं है, इत्यादि। जब संस्कृति के अध्ययन को इसपर लागू किया जाता है, तो व्यक्तिगत लक्षण और व्यवहार शतरंज में व्यक्तिगत चाल के समान होते हैं जो उन नियमों पर आधारित होते हैं जिन पर संस्कृतियां आधारित होती हैं। इसके अलावा, संस्कृति और सांस्कृतिक प्रणालियों को नियंत्रित करने वाला अंतर्निहित सिद्धांत विरोध का है (पामर 1997, मूर 2009)।

अपनी प्रगति जाँचे 3

5) भाषाविज्ञान के विचारों को संस्कृति के अध्ययन में कैसे उपयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 क्लॉउड लेवी–स्ट्रॉस

अब, हम मानवशास्त्रीय विचारों के विकास के एक बहुत ही विशिष्ट संदर्भ में लेवी–स्ट्रॉस के विचारों को समझने के लिए आगे बढ़ते हैं। हम मानवशास्त्रीय विचार प्रक्रिया को मोटे तौर पर दो परंपराओं-काल्पनिक और अनुभवजन्य (प्रयोगसिद्ध) में विभाजित कर सकते हैं। काल्पनिक परंपरा शास्त्रीय विकासवादियों से जुड़ी हैं जिन्होंने विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को मानव विकास के चरणों में वर्गीकृत किया। उनका वर्गीकरण विभिन्न समुदायों के अपने स्वयं के अध्ययन पर नहीं बल्कि यात्रा अभिलेख, सैनिकों की गवाही, मिशनरियों और ऐसे अन्य दस्तावेजों पर आधारित था। इसलिए, उन्हें आर्मचेयर मानवविज्ञानी(ऐसे मानवविज्ञानी जो अपने क्षेत्रकार्य के लिए स्वयं कभी क्षेत्र में गए ही नहीं) के रूप में चिन्हित किया गया क्योंकि उन्होंने मानव स्थितियों के बारे में केवल अनुमान लगाया था। उदाहरण के लिए, यदि आप जेम्स फ्रेजर को देखते हैं तो उन्हें एक संश्लेषक (सिंथेसाइजर) कहा जा सकता है। अपने कार्यालय में बैठकर वे 'आदिम लोगों' के बारे में रिपोर्ट, दस्तावेज पढ़ते थे और इस तरह के अध्ययन के आधार पर वे संस्कृति के बारे में सिद्धांत तैयार करते थे। हालांकि, 20वीं सदी की शुरुआत तक, आर्मचेयरमानवविज्ञान की आलोचना की गई और मानवविज्ञान के एक नए रूप ने आकार लिया। यह क्षेत्रकार्य परंपरा पर आधारित था और इसका नेतृत्व मालिनोवस्की ने किया था। इसे मानवविज्ञान में अनुभवजन्य(प्रयोगसिद्ध) परंपरा के रूप में चिह्नित किया गया है। इस परंपरा के भीतर बड़ी संख्या में विशेष निबंध तैयार किए गए थे जिसमें विश्व में विभिन्न स्थानों पर मानव आबादी के जीवन और कार्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है। एक विशेष संस्कृति या समाज के इस तरह के गहन अध्ययन के साथ, इस परंपरा के भीतर व्यापक सामान्यीकरण का विरोध किया गया। हालांकि, मालिनोवस्की ने अपने बाद के कार्यकाल में विभिन्न संस्थानों के कार्यों पर कुछ सिद्धांत के साथ इससे बाहर आने का प्रयास किया (बर्नार्ड 2000)।

हालांकि लेवी–स्ट्रॉस मानवीय स्थितियों के बारे में व्यापक सामान्यीकरण का प्रयास करना चाहते थे। वह 'बाँझ अनुभववाद' के विरोधी थे। उन्होंने फ्रेजर की तरह सामान्यीकरण का प्रयास किया। उन्होंने कभी भी उस तरह का क्षेत्रकार्य नहीं किया जैसा मालिनोस्की ने किया था। उन्होंने सार्वभौमिक सिद्धांतों की तलाश की जो सभी मानव संस्कृतियों को नियंत्रित करता है। उनके विचारों का केंद्रीय विषय सभी मानव संस्कृतियों के बीच एक अंतर्निहित समानता को मानता है क्योंकि उनके लिए संस्कृति मानव मस्तिष्क का एक उत्पाद है और मानव मस्तिष्क हर जगह समान है।युवावस्था के दौरान लेवी–स्ट्रॉस की भूविज्ञान में रुचि थी। उनके लिए, फ्रायड और मार्क्स के विचार भूविज्ञान में उनके विचारों के समान हैं क्योंकि तीनों सतह के नीचे जाकर छिपी हुई चीजों को बाहर निकालने की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं। बाद में वह एक रूसी भाषाविद्, रोमन जैकबसन के संपर्क में आए, जिन्होंने उन्हें सस्यूर के विचारों और कार्यों से परिचित करवाया। इसलिए, लेवी–स्ट्रॉस में, हम फ्रायड, मार्क्स, सस्यूर और भूविज्ञान के विचारों के संश्लेषण की कल्पना कर सकते हैं।

लेवी–स्ट्रॉस के अनुसार, मानवीय सत्य सार्वभौमिक है, लेकिन उन्हें केवल इस तथ्य को देखकर नहीं समझा जा सकता है क्योंकि वे छिपे हुए हैं और सत्य तक पहुंचने के लिए उनकी व्याख्या करने या तर्कसंगत रूप से सोचने की आवश्यकता है। संरचनात्मक भाषाविज्ञान से संकेत लेते हुए, उन्होंने आगे कहा कि मानव मन द्विआधारी विरोध के सिद्धांत पर काम करता है। यह सार्वभौमिक सिद्धांत है और दुनिया की सभी संस्कृतियों में एक अंतर्निहित द्विआधार है। उनका विचार था कि "मानव समाज, व्यक्तिगत मनुष्यों की तरह कभी भी पूर्ण रूप से निर्माण नहीं करते हैं; वे केवल कुछ संयोजन बना सकते हैं" (पामर 1997: पेज–33)। ये संयोजन एक दूसरे के द्विआधार विपरीत हैं और अंतर के सिद्धांत पर आधारित हैं जैसे हमने इसे किसी भाषा में शब्दों के मामले में देखा था।

संरचनावाद के सिद्धांत ने जिन विचारों को आगे बढ़ाया, उसने 'आदिम लोगों' के बारे में एक पश्चिमी पूर्वाग्रह के खिलाफ काम किया। जब हम विश्वास करना शुरू करते हैं और इस तर्क से स्थापित करते हैं कि दुनिया भर की संस्कृतियों में अंतर्निहित समानताएं हैं तो 'आदिम' का विचार पीछे छूट जाता है। 'द सैवेज माइंड' नाम की अपनी एक किताब में लेवी–स्ट्रॉस ने तर्क दिया कि असभ्य मस्तिष्क जैसी कोई चीज नहीं होती है। मानव मन द्विआधारी विरोध के एक सार्वभौमिक सिद्धांत पर काम करता है। इस तरह के तर्क ने उन लोगों को चुनौती दी जिन्होंने आदिम लोगों की छवि को 'बच्चे जैसा' के रूप में प्रचारित किया, जो अपने लिए निर्णय लेने में सक्षम नहीं हैं।

लेविस–स्ट्रॉस भी मार्सेल मौस के काम से प्रेरित थे। विशेष रूप से वह मौस के 'द गिफ्ट' (1924) से प्रभावित थे। मार्सेल मौस ने तर्क दिया कि समग्र रूप से सामाजिक व्यवस्था या समाज का रखरखाव उपहार देने की प्रथा और विधि पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि उपहार देने के पारस्परिक संबंध में तीन चीजें शामिल हैं, वे इस प्रकार हैं:

क) देने का दायित्व;

ख) प्राप्त करने का दायित्व; तथा

ग) परस्पर लेन– देन का दायित्व।

दूसरे शब्दों में, मौस ने तर्क दिया कि उपहारों के आदान–प्रदान की अंतर्निहित संरचना को देखकर सामाजिक संबंधों को समझा जा सकता है। उसके लिए उपहार का आदान–प्रदान अंतर्निहित वास्तविकता थी जो सामाजिक संबंध या समाज आधारित था। बाद में क्लॉउड लेवी–स्ट्रॉस ने एक पुस्तक भी लिखी जिसका शीर्षक –"द एलीमेंट्री स्ट्रक्चर्स ऑफ किनशिप" (1949) था, जिसमें उन्होंने मौस के उपहारों के आदान–प्रदान के तर्क को महिलाओं के आदान–प्रदान तक बढ़ाया। मौस की तरह, लेवी–स्ट्रॉस ने तर्क दिया कि महिलाओं का आदान–प्रदान अंतर्निहित संरचना है जिस पर नातेदारी आधारित है। महिला विनिमय नातेदारी व्यवस्था के आधार पर है क्योंकि यह समूहों के बीच सामाजिक संबंधों को परिभाषित करता है। उन्होंने अनाचार निषेध की सार्वभौमिकता का उदाहरण दिया जो उनके अनुसार सामाजिक रूप से हास्यास्पद था और नैतिक रूप से अपमानजनक नहीं था (पामर 1997)।

लेवी–स्ट्रॉस को मिथकों के अध्ययन के लिए अपने संरचनात्मक विचारों को लागू करने के लिए जाना जाता है। उन्होंने 1964 और 1972 के बीच पौराणिक कथाओं (*माइथोलॉजीक्यूस*) के चार खंड लिखे। उनका विचार था कि मानव मन को समझने के लिए मिथकों का अध्ययन अनिवार्य है। मिथक मानव विचार प्रक्रिया की अंतर्निहित

संरचनाओं को प्रकट करते हैं। उनका यह भी विचार था कि चूंकि मानव मन बड़े ब्रह्मांड या ब्रह्मांड का हिस्सा है, यह स्वयं ब्रह्मांड की संरचना को दर्शाता है। इस प्रकार, मन के उत्पाद जैसे मिथक और भाषाएं दुनिया की संरचना को प्रकट करती हैं। उदाहरण के लिए, द्विआधारी विरोध की धारणा जो लेवी–स्ट्रॉस की मानव को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत की समझ के लिए केंद्रीय है, मन को उस सिद्धांत के रूप में देखा जा सकता है जिस पर ब्रह्मांड जीवन और मृत्यु, दिन और रात, सतह और आकाश आदि जैसे द्विआधारी विरोधों के रूप में आधारित है। यह ब्रह्मांड की संरचना है जो मानव मन की संरचना को सूचना और आकार देती है और इसलिए मानव मन द्विआधारी विरोध के सिद्धांत द्वारा शासित होता है। यह द्विआधारी विरोध संस्कृति के हर पहलू में परिलक्षित होता है क्योंकि वे मानव मन के उत्पाद हैं। इस तरह के तर्क को निगमनात्मक तर्क के रूप में जाना जाता है, जहां हम यह मान लेते हैं कि चीजें एक निश्चित तरीके से संरचित हैं और फिर हमारा प्रत्येक सांस्कृतिक घटना में उन तरीकों की तलाश करना बाकी है। दूसरे शब्दों में, हम सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, इस मामले में, हम सामान्यतः इस सिद्धांत में विश्वास करते हैं कि मानव मन द्विआधारी विरोध के सिद्धांत पर आधारित है और अब हम विशिष्ट मामलों में इस संरचना को देखने के लिए आगे बढ़ते हैं।

द्विआधारी विरोध (बाइनरी अपोजिशन)– संरचनावाद को समझने के लिए द्विआधारी विरोध की अवधारणा केंद्रीय है। यह सिद्धांत कहता है कि मानव मन द्विआधारी विरोध के सिद्धांत पर काम करता है। इसका अर्थ है कि हमारी विचार प्रक्रिया द्विआधारी है। उदाहरण के लिए, दिन और रात, बूढ़ा और जवान, नर और मादा, आदि। यह मानव मन का अंतर्निहित सिद्धांत है और चूँकि समाज और संस्कृति मानव मन की रचनाएँ हैं, इस मौलिक द्विआधारी को समाज और संस्कृति के हर पहलू में देखा जा सकता है।

अपनी प्रगति जाँचे 4

6) संरचनावाद के सिद्धांत ने 'आदिम लोगों' के बारे में पश्चिमी पूर्वाग्रह के विपरीत कैसे काम किया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) मार्सेल मौस के किन विचारों ने लेवी–स्ट्रॉस को प्रभावित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

8) मिथक क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 एडमंड लीच और (नव) संरचनावाद

लीच ब्रिटेन में फ्रांसीसी संरचनावाद के प्रमुख समर्थकों में से एक थे। वह लेवी–स्ट्रॉस के विचारों से प्रभावित थे और उन्होंने ब्रिटेन और अन्य जगहों पर अपने विचारों को लोकप्रिय बनाने के लिए फ्रांसीसी संरचनावाद और लेवी–स्ट्रॉस पर बहुत कुछ लिखा। हालाँकि, बाद में, वह भी लेवी–स्ट्रॉस के संरचनावाद के सबसे बड़े आलोचकों में से एक बन गए। संरचनावाद के विचारों में परिवर्तन करने और इसे एक नया रूप देने के लिए लीच को कभी–कभी नव संरचनावादी के रूप में भी जाना जाता है। लीच ने संरचनावाद का एक आधारभूत और अनुभवजन्य विचार विकसित किया। वह बर्मा में(अब म्यांमार) *काचिनों* के बीच अपने कार्य के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं। उन्होंने इस काम पर आधारित एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था–'पॉलिटिकल सिस्टम्स ऑफ हाइलैंड बर्मा' जो 1954 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में उन्होंने बर्मा की राजनीतिक व्यवस्था को दो विपरीत ध्रुवों या प्रतिमानों और एक मध्यवर्ती प्रतिमान के रूप में समझने की कोशिश की। इन मॉडलोंके नाम इस प्रकार हैं, *गुमलाओ*– यह एक समतावादी और लोकतांत्रिक प्रतिमान है, *शान*– यह एक पदानुक्रमित और निरंकुश प्रतिमान(मॉडल) है और *गुमसा*– यह एक मध्यवर्ती प्रतिमान(मॉडल) है।जब इसकी तुलना लेवी–स्ट्रॉस के संरचनावाद से की जाती है,तो एक मध्यवर्ती राजनीतिक व्यवस्था के मॉडल के रूप में यह ज्यादा दिखता है। इसके अलावा, ये प्रतिमान अनुभवजन्य आंकड़ों पर आधारित थे,न कि तर्कसंगत विचार प्रक्रिया पर जो कि संरचनावाद का हिस्सा था(गॉर्डन एवं अन्य, 2011; लीच 1970, 1973)।

लीच का विचार था कि बर्मा की राजनीतिक व्यवस्था समय के साथ बदल रही है। कभी–कभी यह राजनीतिक व्यवस्था समतावादी *गुमलाओ* मॉडल द्वारा शासित और हावी होती है और अन्य अवसरों पर यह पदानुक्रमित *शान* मॉडल द्वारा शासित होता है। हालांकि, उन्होंने आगे कहा कि बर्मा की राजनीतिक व्यवस्था के बारे में केवल इन दो विपरीत ध्रुवों के संदर्भ में सोचना एक गलती होगी क्योंकि एक तीसरा प्रतिमान भी मौजूद है और वह *गुमलाओ* और *शान* प्रतिमान दोनों का मिश्रण है। लीच के अनुसार यह समझ केवल अनुभवजन्य क्षेत्र के आंकड़ों के आलोक में ही संभव थी। उन्होंने इतिहास को महत्व दिया जो लेवी–स्ट्रॉस के संरचनावाद से अनुपस्थित था। लीच के अनुसार, ऐतिहासिक आंकड़ा 100 से 150 वर्ष के बीच है जो हमें समाज को समझने के लिए प्रतिमान (मॉडल) विकसित करने में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि दे सकता हैं। बर्मा के राजनीतिक व्यवस्था के ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण के कारण ही हम *गुमलाओ* के रूप में तीसरे प्रतिमान के अस्तित्व की समझ तक पहुंच सके। इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि लीच अंतर्निहित संरचनाओं या प्रतिमानों के संदर्भ में बात कर रहे हैं लेकिन ये अनुभवजन्य जमीनी आंकड़ों के आधार पर उत्पन्न होते हैं। उन्होंने गतिशील संरचना के विचार को भी पेश किया। इसका अर्थ यह है कि संरचना स्थिर नहीं है

जैसा कि लेवी–स्ट्रॉस ने माना था, बल्कि यह समय के साथ बदल जाता है। लीच ने संरचना की धारणा के भीतर परिवर्तन का वर्णन किया है। लेवी–स्ट्रॉस ने सार्वभौमिक संरचनाओं के बारे में बात की लेकिन लीच ने अपने विचार का उपयोग स्थानीय संरचनाओं के बारे में बात करने के लिए किया जैसा कि ऊपर बर्मा के राजनीतिक व्यवस्था के उदाहरण में बताया गया है।

अपनी प्रगति जाँचे 5

9) लीच और लेवी–स्ट्रॉस के विचारों में क्या समानताएँ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

10) लीच और लेवी–स्ट्रॉस के विचारों में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.7 सारांश

उपरोक्त चर्चा को यह कहकर सारांशित किया जा सकता है कि मानवविज्ञान में संरचनावाद को मानवशास्त्रीय विचार में एक आदर्श बदलाव के रूप में देखा जाना चाहिए। यह बदलाव समाज को एक विचार प्रणाली के रूप में समझने की दिशा में एक प्राकृतिक प्रणाली थी। क्लॉउड लेवी–स्ट्रॉस संरचनावाद के अग्रणी विद्वान थे और उनके विचार संरचनात्मक भाषाविज्ञान से प्रभावित थे। फर्डिनेंड डी सस्यूर के विचारों के लिए संरचनावाद बहुत अधिक ऋणी है। संरचनावाद निगमनात्मक तर्क पर आधारित है क्योंकि यह सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है। यह दुनिया की सभी संस्कृतियों के बारे में सामान्यीकरण करता है और फिर विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों और मामलों में उन सामान्य सिद्धांतों का पता लगाने की कोशिश करता है। यह एक भव्य सिद्धांत है जो इस मान्यता पर आधारित है कि दुनिया भर में मानव संस्कृतियां समान हैं क्योंकि वे सभी मानव मन के उत्पाद हैं, जो जैविक रूप से समान हैं और द्विआधारी विरोध के सिद्धांत पर काम करते हैं। लुईस ड्यूमॉन्ट और शेरी ऑर्टनर जैसे मानवविज्ञानियों ने क्रमशः जाति और लिंग का अध्ययन करने के लिए संरचनावाद के विचारों का उपयोग किया। ड्यूमॉ(न्ट) के अनुसार, जाति को नियंत्रित करने वाला अंतर्निहित सिद्धांत शुद्धता और अशुद्धता के द्विआधारी विरोध का सिद्धांत है। इसी तरह, महिलाओं के सार्वभौमिक अधीनता पर काम करते हुए शेरी ऑर्टनर का विचार था कि दुनिया में हर जगह महिलाओं की प्रकृति से और पुरुषों की संस्कृति से तुलना की जाती है। यह प्रकृति–संस्कृति विरोध महिलाओं के लिए सार्वभौमिक अधीनता का

आधार रहा है क्योंकि संस्कृति को प्रकृति से श्रेष्ठ माना जाता है और यह प्रकृति को उसकी इच्छा के अनुसार वश में करने में सक्षम है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि द्विआधारी के सन्दर्भ में द्विआधारी विरोध(बाइनरी अपोजिशन) का सिद्धांत और अंतर्निहित अर्थों की खोज संरचनावाद के मूल में है।

9.8 सन्दर्भ

Barnard, A. (2000). *History and Theory in Anthropology*. Cambridge. Cambridge University Press.

D'Andrade, Roy. (1995). *The Development of Cognitive Anthropology*. New York: Cambridge University Press.

Eriksen, T.H. and Nielsen F.S. (2001).*A History of Anthropology*. Virginia, USA. Pluto Press.

Gordon, R.J, Lyons A.P. and Lyons H.D. (2011). (eds.) *Fifty Key Anthropologists*.Oxon.Routledge.

Leach E. (1970). *Lévi-Strauss's*. London. Fontana

….(1973). Structuralism in Social Anthropology. In *Structuralism: An Introduction*.

D. Robey (ed.). p-313-331. Oxford. Clarendon Press.

Moore J.D. (2009).*Visions of Culture: An Introduction to Anthropological Theories and Theorists*. UK. AltaMira Press.

Palmer D.D. (1997). *Structuralism and Poststructuralism*. Danbury. Writers and Readers.

9.9 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) भाग 9.1 के पहले और दूसरे पैराग्राफ (अनुच्छेद) का संदर्भ लें।
2) भाग 9.1 के तीसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
3) भाग 9.2 के पहले और दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
4) भाग 9.2 के तीसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
5) भाग 9.3 का संदर्भ लें।
6) भाग 9.4 के चौथे पैराग्राफ (अनुच्छेद) का संदर्भ लें।
7) भाग 9.4 के पांचवें पैराग्राफ का संदर्भ लें।
8) भाग 9.4 के छठे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
9) भाग 9.5 के पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।
10) भाग 9.5 के पहले और दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।